ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 170-174

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

प्रागैतिहासिक चित्रों की विषयवस्तु का विवेचनात्मक अध्ययन

1. नीरज कुमार मौर्य
2. डॉ0 अलका तिवारी

1. शोध अध्येता, 2. एसोसिएट प्रोफेसर, चित्रकला विभाग, एन. ए. एस. कॉलेज, मेरठ समन्वयक, ललित कला विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ0प्र0) भारत

Received-19.06.2022, Revised-23.06.2022, Accepted-27.06.2022 E-mail: alkatiwari151@gmail.com

सारांशः– *प्रागैतिहासिक का अर्थ है 'इतिहास से पहले या पूर्व' जिसका कोई लिखित प्रमाण न हो और जिसका लिखित प्रमाण मिलता है, वह इतिहास कहलाता है, परंतु प्रागैतिहासक कालीन कुछ ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिनसे इसके काल का निर्धारण किया जा सका है। जिस को साधन मानकर उस समय के विषय में कुछ जानकारी प्राप्त हो सकी है। आदिकाल से संबंधित जितने भी प्राचीनतम आदिम चित्रो के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। उनसे हमें यह पता चलता है कि उसने मानव के भावो, रहन–सहन, जीवन के कठोर संघर्षों तथा बाह्य परिस्थितियों के संघात का परिचय हमारे सम्मुख किस प्रकार से प्रस्तुत किया है। इसके साथ ही उस समय के मानव की अंदर की भावना, सृजनात्मकता और मौलिक उदभावना की सजगता तथा उसकी सौंदर्य भावना की अभिव्यक्ति के दर्शन भी हमे इन चित्रों के माध्यम से हो जाते है।*

कुंजीभूत शब्द– प्रागैतिहासिक, आदिकाल से संबंधित, प्राचीनतम आदिम चित्रो, सृजनात्मकता, मौलिक उदभावना।

प्रागैतिहासिक कालीन चित्रो से सम्बंधित बहुत से साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जिनके आधार पर शोधकर्ताओं ने विभिन्न प्रकार की खोज करके इसका विस्तृत अध्ययन किया तथा उसके तथ्यों को दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किया है। हम यह कह सकते हैं कि जो भी प्रागैतिहासिक मानव के द्वारा रचित चित्र प्राप्त हुए हैं। वह चित्र उसके संपूर्ण जीवन गाथा का विस्तृत विवरण है। इन चित्रों के माध्यम से ही आदिमानव ने अपने दैनिक कार्यों, मनोरंजन, मन की भावनाओं तथा उल्लास, भय, जादू–टोना आदि को दर्शाया है।

प्रागैतिहासिक काल को विद्वानों ने अध्ययन की सुविधा के लिए तीन भागों में बांटा है क्योंकि यदि किसी भी विषय का एक क्रमबद्ध अध्ययन करना हो तो उसके लिए विषय को सुव्यवस्थित करना बहुत ही जरूरी होता है। विद्वानों ने भी इसी प्रकार से प्रागैतिहासिक काल के तीन भाग किए हैं, जैसे कि पहला पुरापाषाण काल, दूसरा मध्य पाषाण काल, तीसरा नवपाषाण काल।

आदिमानव के काल विभाजन का प्रमुख स्रोत शैलचित्र विषय व उसके द्वारा बनाये गए पाषाण के औजार ही माने गए हैं, क्योकि इन चित्रों के विभिन्न स्तर हमे इन गुहा चित्रो में देखने को मिलते है इसके साथ – साथ जो आदिमानव ने औजार बनाए हैं उनके आधार पर भी इसके काल का विभाजन हो सका है। यदि इस प्रकार के शैल चित्र न प्राप्त होते, तो शायद इनके काल का निर्धारण करना तथा उसके जीवन के विषय में छिपें हुए गूढ़ रहस्यों तथा भावनाओं को समझना बड़ा ही मुश्किल और दूभर कार्य हो जाता। पुरापाषाण कालीन मानव ने विश्व के विभिन्न स्थानों पर व विभिन्न कालावधि में चित्रांकन कार्य किया है। जब हम पूरे विश्व के पाषाण कालीन (आदिकालीन) मानव द्वारा बनाए गए चित्र को देखते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि यह शैल चित्र किसी एक चित्रकारो की टुकड़ी ने हीं चित्रित किए हो। यह शैल चित्र भारतीय प्रागैतिहासिक कालीन स्थलों पंचमढ़ी, मिर्जापुर, होशंगाबाद, लिखोनिया,भल्डरिया के हो या ये चित्र अफ्रीका और स्पेन की शैल गुफा में चित्रित चित्र हो। यह चित्र अलग–अलग स्थानों पर होते हुए भी सर्वाधिक साम्यता रखते हैं इनका मुख्यतः एक ही विषय रहा है और वह है आखेट। पुरापाषाण कालीन मानव ने अपने दैनिक जीवन को विश्व के प्रत्येक स्थान पर चित्रित किया है। आदिम कलाकार चित्रो के माध्यम से अपने जीवन के कुछ स्मरणीय तथ्यों को यादगार बनाना चाहता होगा तथा अपनी धरोहर को आने वाली पीढ़ियों को सौपकर अमर कर देना चाहता होगा इसलिए उसने इन शैलचित्रों का अंकन किया। संपूर्ण विश्व में पाए गए इन प्रागैतिहासिक चित्र–विषयो में विभिन्न प्रकार की साम्यता देखने को मिलती हैं, जिनके आधार पर यह प्रतीत होता है कि संपूर्ण विश्व के प्रागैतिहासिक चित्र एक समान है।

भारत में पाए जाने वाले प्रागैतिहासिक कालीन स्थलों में सर्व प्रमुख स्थल मिर्जापुर, रायगढ़ क्षेत्र, पंचमढ़ी क्षेत्र, होशंगाबाद, भोपाल, भीमबेटका, बांदा क्षेत्र तथा सिंघनपुर जैसे प्रमुख क्षेत्र है। मिर्जापुर क्षेत्र भारत मे ऐसा क्षेत्र है जिसमे प्रागैतिहासिक कालीन चित्रों की खोज सर्वप्रथम हुई। सर्वप्रथम काकबर्न व कार्लाइल महोदय ने यहा पर शैल चित्रों को खोजा था एवम इसको संसार भर के समक्ष पहचान दिलायी। यह क्षेत्र कैमूर की प्रसिद्ध पहाड़ी क्षेत्रो के अंतर्गत आते हैं, जहाँ मिर्जापुर क्षेत्र में 'सवत्सा गाय' का प्रसिद्ध चित्रांकन प्राप्त हुआ है, जो बहुत ही सुंदर बन पड़ा है। इस चित्र में गाय के पास एक छोटे बच्चे का चित्रांकन हुआ है, जो कि उसका बछड़ा जान पड़ता है चित्र में वात्सल्य का भाव दर्शनिय है, इसमें जो रेखाएं खींची गई है वह बहुत ही सरल और सशक्त रेखाएं है। इसके अतिरिक्त यहां से अन्य चित्रों को भी प्राप्त किया गया है, जिनमे आखेट

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

के चित्र प्रमुख है क्योंकि शैल चित्रों की जो विषय वस्तु रही है वह प्राय उसके आसपास का परिवेश ही रहा है, उसने अपने चारों ओर के वातावरण को ही अपना चित्र विषय बनाया है। उसमें भले ही कोई आखेट दृश्य हो, पशु पक्षियों का अंकन हो, मानवाकृति हो, युद्ध दृश्य में चित्रित मानव हो, पशुओं पर संवारी करते हुए हो, इनके अतिरिक्त पारिवारिक या सामाजिक दृश्य भी चित्रित किए गए हैं। यूरोपीय देशों में भी आखेट, संगीत संबंधी दृश्य, पूजा प्रतीक एवं क्षेपांकन, पशुपालन, घुड़सवार इत्यादि विषयो को चित्रित किया है। प्रागैतिहासिक कालीन आदिम चित्रकार ने इन्हीं विषयों को केंद्र बिंदु मानकर अपना चित्रण कार्य किया है। अल्तामिरा की गुहाओं में हिरन का एक मनोरम चित्र प्राप्त हुआ है, जिसमे हिरण का शरीर सौष्ठव एकदम कोमल बना हुआ है इसके चित्र में अबोधता व चंचलता के भाव परिलक्षित होते है, भारतीय प्रागैतिहासिक कालीन चित्रों के क्षेत्रों को लेकर बातें करें तो भीमबेटका बृहत स्थल के रूप में प्राप्त हुआ है, जिसमें 600 से भी अधिक शैलचित्र गुफाएं प्राप्त हुई है, इन गुफाओं की खोज का श्रेय श्री वी एस वाकणकर को जाता हैं, जिन्होंने इन गुफाओं का उत्खनन कार्य किया। यह गुफाएं प्रागैतिहासिक कालीन चित्रों की विषय में बहुत ही महत्वपूर्ण मानी गई है क्योंकि इसमें लगभग 600 गुफाओं से भी अधिक गुफाएं प्राप्त हुई है जिनमें लगभग 475 गुफाओं में चित्र प्राप्त हुए हैं। इस काल में प्रागैतिहासिक कालीन मानव प्रकृति की गोद में रहता था उसने तत्कालीन विषयो को ही अपना चित्र विषय बनाया हुआ था जिसके कारण इस युग में कृत्रिमता का अभाव देखने को मिलता है और वास्तविकता के ही दर्शन होते हैं। उसने अपने आसपास की घटनाओं का वास्तविक चित्रण करने का प्रयास किया है जिसमें वह आदिम कलाकार पूर्णतया सफल भी हुआ है और उसके जो विषय है उसकी जो सरल रेखाएं हैं वह दर्शनीय है। इन गुणों के प्रयोग के द्वारा चित्र विषय स्पष्ट हो गए है जो दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। इस युग के मानव ने अपना विषय धनुष बाण लिए हुए मानव, युद्ध करते हुए, विजय उत्सव पर नृत्य करते हुए, ढाल तथा अन्य वाद्य यंत्रों को बजाते हुए चित्रण किया गया है लेकिन फिर भी इसकी सबसे लुभावनी विषय वस्तु आखेट रही है उसने अपने चित्रों में ज्यादातर आखेट के ही विषयो को चित्रित किया है जिसमें उसने सूअर, गैंडा, बारहसिंघा, हिरण, भालू, हाथी, नीलगाय, भैंसे, घोड़े आदि पशुओ तथा विविध प्रकार के पक्षियों का भी अंकन किया है। इसके अतिरिक्त उसने जादू टोने, स्त्री–पुरुष ,आधी व्याधि, रोग आदि की भावना को चित्रकला के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है क्योंकि उसने प्र.ति की गोद में रहकर उसके भय तथा दुख का एहसास बहुत ही निकटता से किया था। इन शैल चित्रों की रचना के मूल में जिन भावनाओं को लेकर कार्य किया गया है वह उनकी प्रकृति पर विजय की भावना हो सकती है, अपने चारों तरफ के घटनाओं की स्मृति को अंकित करना हो सकता है। आदिमचित्र होते हुए भी इन चित्रों की शैली व्यक्ति के आंतरिक उल्लास और आवेग से परिपूर्ण हैं उन्होंने इन चित्रों के अंकन के लिए प्रकृतिक खनिज रंगों का ही प्रयोग किया है जिनमें रामराज, गेरू ,हिरोजी आदि का प्रयोग बहुत ही प्रमुखता के साथ हुआ है। विंध्याचल की गुफाओं के निकट लाल रोड़ी से पीसे हुए नमूने और रंगों के पीसने की सिले भी मिली है जिससे इस काम का बड़े स्तर पर होने का पता चलता है ।

प्रागैतिहासिक कला विश्व कला की सुदृढ़ नीव है जिसमें पाश्चात्य तथा पूर्वात्य के भेद से परे मानव इतिहास की गरिमा छिपी है जो हमारे चेतना को जागृत करके मानव विकास को गतिशील बनाने में तथा जीवन मूल्यों को समन्वित करने में सदैव सहायक रही है। इन्होंने अपने चित्रों में सामान्य साधनों के प्रयोग से भी चित्र में सजीवता तथा सौंदर्य भर दिया है जो हजारों वर्षों बाद भी बना हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है मानो यह चित्र आज के ही किसी आधुनिक चित्रकार के द्वारा बनाए गए हो। प्रागैतिहासिक कालीन मानव की कला में यथार्थता एवं मौलिकता दोनों ही पाई जाती हैं पशु के चित्रों में शरीर के विभिन्न अंगों–उपांगों, मांसपेशियों, नस्लो और भाव भंगिमाओं को चित्रित न करके उनकी स्थाई प्रतिमा प्रदर्शित की गई है। चित्र में मौलिकता, उद्भावना तो है परंतु सौंदर्य पक्ष अधिक विकसित नहीं हो पाया है यह चित्र विषय शैली की दृष्टि तथा सामग्री की दृष्टि से उस युग के मानव जीवन के प्रतीक हैं कि किस प्रकार से उस समय का मानव रहता होगा और अपना जीवन–यापन करता होगा। उसने अपने दैनिक जीवन की संपूर्ण घटनाओं को इन चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करके अपने जीवन का अच्छा खासा परिचय दिया है।

इस युग के चित्रो में जो मुख्य बात देखने को मिलती है वह उनके द्वारा बनाये गए एक चश्म तथा दो चश्म चहरे है, जो बहुत ही सरलता से बनाये बनाए गए हैं। उनकी कला किसी बाल कलाकार की अनघड़ रचनाओं के समान प्रतीत होती हैं, क्योंकि उनको किसी प्रकार का कलात्मक ज्ञान नहीं था फिर भी सीमित साधनों द्वारा चित्रों में भावपूर्ण एवं मौलिक अंकन किया गया है जिनमें उनकी कला कौशल और दक्षता के दर्शन होते हैं। इस युग का कलाकार कला का प्रयोग व्यवसायिक रुप में नहीं करता था, बल्कि उस समय कला जनजीवन में समायी थी और दैनिक जीवन का अंग थी इसीलिए उसके चित्र भी दैनिक जीवन की ही घटनाओं पर आधारित रहे हैं और उसने इन्हीं विषयों को अधिक से अधिक चित्रित किया है। भारत के प्रागैतिहासिक स्थलों की भांति ही विश्व में भी प्रागैतिहासिक स्थलों की खोज हो चुकी है जिनमें इसी प्रकार के चित्रों को

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

पाया गया है, जिस प्रकार के चित्र भारतीय आदिम गुहाओं में बने हुए मिले हैं। जैसा की पूर्व में ही बताया जा चुका है कि आखेट और संगीत वर्धन आदि विषयों का चित्रांकन भी हुआ है उसी प्रकार से विदेशों में भी भीमबेटका और मिर्जापुर जैसे ही चित्रों का अंकन स्वभाविकता के साथ हुआ है। इन रेखा चित्रों में विषय की इतनी स्पष्टता आ गई है कि दर्शक देखते ही समझ जाता है कि सम्मुख चित्र में आदिम कलाकार द्वारा क्या दिखाने का प्रयास किया है। यदि हम उत्तरी स्पेन तथा दक्षिण फ्रांस के गुफा चित्रों की बातें करें तो हमें उन चित्रों में हिम युग की चित्र सामग्री सुरक्षित मिलती है हालांकि कुछ चित्र तो काल कलवित हो चुके हैं, परंतु फिर भी उनमें कुछ चित्र तथा विचित्र संकेत अक्षर बने हुए प्राप्त होते हैं। इनके साथ ही डोरडॉन की ला–माउथ गुफा में भी शैल चित्र प्राप्त हुए हैं। इन गुफा चित्रों के ऊपर एक लंबी कालावधि बीत जाने के कारण एक क्षार सी जम गई है जिसके आधार पर इन चित्र को बहुत प्राचीन माना गया है। इन चित्रों में जिन पशुओं का प्रमुखता से अंकन हुआ है, वह जातियाँ प्रायः विलुप्त हो गई हैं और संपूर्ण यूरोप में कहीं नहीं मिलती, जैसे कि बारहसिंघा (रेनडियर), हाथी (मैमथ), गैंण्डा (रीनोसेरोज), कस्तूरी, वृषभ (मस्क ऑक्स), महिष (बाईसन) तथा पश्चिम एशिया में मिलने वाला सोंगा हिरण आदि जीव ऐसे है, जो फ्रॉको कैंटेब्रियन क्षेत्र में निश्चित रूप से हिम युग के अंतिम चरण में रहते होंगे। अतः इन कलाओं को भी हिम युग की ही माना जाना चाहिए। इसमें जो अवशेष प्राप्त होते हैं उनमें सींग, हड्डी, शिला आदि पर उभरी हुई तथा नक्काशी भी की गई है, जिससे उनमें गहराई से रेखाएं स्थाई बन गई है।

आदि मानव ने रेखाओं को बहुत ही सरलता से अंकित किया है, जिसका प्रमाण हमें उसके द्वारा बनाए गए पशु आकृतियों में परिलक्षित होता है ऐसा प्रतीत होता है, मानो वह पशुओं की सरल आकृति निर्माण में सिद्धहस्त हो। इसी के साथ ही क्षेपांकन के भी यहा प्राण मिलते है तथा उसके साथ ही यह अंगुलियों से चित्रांकन के स्थान पर किसी ऐसे नुकीले पत्थर का प्रयोग होने लगा था, जिससे कि शिला के ऊपर कठोरता से एक लाइन डाली जाती थी, हो सकता है यह कठोर पत्थर चकमक पत्थर ही हो जिससे शीला के ऊपर भी गहरी रेखाएं खींचकर चित्रांकन किया जा सकता था। यहां तक आते–आते उसकी चित्रण प्रविधि में और सुधार आ गया था। उसने रेखा जाल ना डालकर केवल आकृति को ही चित्रित करने का प्रयास किया है जिसमें संभवत वह सफल भी हुआ है। लास्को की गुफाओं में लाल रंग के विशाल पशुओं का अंकन है जिनके सिर काले तथा गहरे बादामी रंग के हैं यह सब इसी युग की आकृतियां है। इस युग के मानव ने चित्रण इतना सुंदर और सरलता के साथ किया है मानो आज का कोई प्रभाववादी चित्रकार ही चित्रण कार्य कर रहा हो। इनके मुख्य चित्रों में अल्तमिरा की गुफा से प्राप्त हिरण, महिष, बाईसन आदि के चित्र भारतीय प्रागैतिहासिक चित्रो की भांति ही मिले है यहां छापा कला का भी प्रमाण मिलता है हाथों को रंग कर दीवारों पर लगाया गया है जिससे कि उनकी छाप दीवारों पर आ गई है। यहां पर एक आक्रमण करता हुआ महिष कितना नैसर्गिक जान पड़ता है, मानो वह तीव्र गति से प्रहार (आक्रमण) कर रहा हो। रेखाओं में अत्याधिक गति है, शरीर को इस तरह से बनाया गया है, जैसे कोई महिष उछलकर आक्रमण करने की स्थिति में हो और उसका फोटो आज के किसी फोटोग्राफर ने कैमरे से ले लिया हो। महिष की पूंछ ऊपर उठी है आगे तथा पीछे के पैर मुड़े हुए हैं, आगे से गर्दन नीचे झुकाकर सिंग के द्वारा पूरे बल के साथ प्रहार (आक्रमण) करने को आतुर है।

ला–कम्ब्रेल्ली की गुफाओं के बीच मेंमथ (हाथी) के चित्र प्राप्त हुए हैं जो बहुत ही स्वाभाविक बन पड़े है। यहीं पर रीछ तथा अश्वारोहियों का अंकन प्राप्त होगा है इन चित्रों को इस प्रकार से दिखाया गया है कि कुछ मानव आकृतियां अश्वो के ऊपर चढ़कर कहीं जा रहे हैं जो बहुत ही स्वभाविक है इन्हीं गुफा में एक और चित्र मिला है, जो चीते की अपेक्षा सिंह या शेर का अधिक जान पड़ता है। यहाँ पर पशुमुख धारण किए हुए मनुष्य की चित्र आकृति भी प्राप्त होती है, जो सर्वाधिक विशाल है और इसके अतिरिक्त हाथी का सिर पहने हुए आकृति भी यहां पर प्राप्त होती है। इस बात से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय के कलाकार ने भी मानव–पशु (आधा मानव आधा पशु) की कल्पना कर ली हो। भारतीय देवी–देवताओं में भी मानव पशु आकृतियां प्रचलन में थी जैसे श्री गणेश।

लास्को की गुफाओं में शिकार के मार्मिक दृश्य चित्र चित्रित है जिसमें बाईसन (भैंसे) को भेदता हुआ भाला, सिंगो से वार करने की स्थिति में पशु जिसके समक्ष एक मानव पक्षी का मुखौटा पहने नीचे पड़ा है। यह चित्र दुखांत विषयों के अंग हैं जिनमें दुखद घटनाओं को चित्रित किया गया है। यही पर विशाल कक्ष बनाया गया है, जिसका नाम 'जंगली वृषभों वाला कक्ष' कहा जाता है इनके चित्र बहुत ही मार्मिक है। यहां पर लाल तथा काले रंगों से निर्मित विशाल गाय का चित्र है, जो स्वभाविक जान पड़ता है इसी में ही तैरते हुए हिरण का भी चित्र बना है जिसमें हिरणों का झुंड बनाया गया है। इन हिरनों के केवल सिर तथा गर्दन ही दिखाई दे रही है ऐसा लगता है जैसे आज का प्रभाववादी कलाकार इसको चित्रित कर गया हो।

त्राये फ्रेअर्स अथवा तीन भाइयों की गुफा में एक बहुत ही प्रसिद्ध चित्र है जिसको ओझा के नाम से जाना जाता है इसमें दो पशु आकृतियां है तथा एक मानवपशु आकृति है जिसके हाथों में कुछ बंसी सी जान पड़ती है जिसे वह मुँह के पास

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

लगाते हुए उसमें हवा फूकने का प्रयास कर रहा है। इस मानव ने भी महिष मुंड पहना हुआ है, जिसके कारण इसको मानवपशु कहा गया है। जैसा कि पूर्व वर्णन किया जा चुका है कि उस समय मनावपशु (आधा मनाव आधा पशु) की कल्पना की जा चुकी थी। इसी प्रकार से विश्व की प्रागैतिहासिक कला में अपना अविस्मरणीय योगदान देने में भारतीय शैल चित्र अग्रणी है। यहां पर आदिम कलाकारों द्वारा चित्रित वृहत कला क्षेत्र पाए गए हैं जिनमें पूर्व में वर्णित मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश), भीमबेटका, पंचमढ़ी आदि को प्रमुखता से लिया जा सकता है। इन चित्रों का जो मार्मिक दृश्य यहां पर अंकित किया गया है वह विश्व स्थलों पर अन्यत्र देखने को नहीं मिलता है। जितनी चित्रण सामग्री भारत व अन्य स्थलों से प्राप्त हो रही हैं वह बहुत कम है, जिससे अभी भी अधिक खोज एवम परिश्रम करने की आवश्यकता महसूस होती है। यदि कई वर्षों तक शोधकर्ताओं की टीम इस में शोधकार्य करें, तब जाकर इसमें कुछ और सामग्री प्राप्त हो सकती है। कैमूर की जो पहाड़िया है उनमें सबसे पहले भारतीय गुफा चित्र प्राप्त हुए है, जो इस क्षेत्र का सुप्रसिद्ध चित्र है, वह 'सूअर का आखेट' का है, जो मिर्जापुर नामक स्थान पर मिला है, जिसका चित्रण अत्यंत मार्मिक तथा यथार्थता से किया गया है, चित्र में सुअर का मुंह खुला हुआ है जिससे कि उसकी असहनीय पीड़ा का एहसास दर्शक को देखते ही हो जाता है मानो वह सूअर दर्द से कराह रहा हो और पीड़ा में उसका मुंह खुला हुआ हो। इन चित्रों को गेरू रंगों से बनाया गया है। लिखूंनिया दरी में भी इसी प्रकार के 'पशु आखेट 'हाथी का शिकार' एवं 'नृत्य वादन' आदि के दृश्य अंकित किए गए हैं जिनमें घुड़सवार पालतू हथनी की मदद से हाथी को पकड़ने का प्रयास कर रहे हैं, यह बहुत ही प्रसिद्ध चित्र है। मानिकपुर में भी एक सुसज्जित द्वार पर एक चोचदार पुरुष आकृति बैठी हुई बनाई गई है जिससे यह सिद्ध होता है कि यूरोप और एशिया के आदिम कला एक समान है क्योंकि विषय एवं आकृतियां काफी समान जान पड़ती है रायगढ़ क्षेत्र के अंतर्गत कबड़ा पहाड़, नवागढ़, कर्मा गढ़, खैरपुर तथा बोतालदाव व खरसिया आदि आते हैं, अधिकतर विद्वान सिंघनपुर को ही यहां का श्रेष्ठतम स्थान मानते है। यहां पर गेरूए रंग से चित्रांकन हुआ है यह क्षेत्र अमूर्त चित्रों के लिए भी विख्यात है क्योंकि यहां अमूर्तन के कुछ अवशेष प्राप्त हुए हैं इसीलिए सिंघनपुर स्थल विश्व प्रसिद्ध हो गया है। पंचमढ़ी क्षेत्र भी यहां आदिम चित्रों की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यहां जो चित्र प्राप्त हुए हैं उनके विषय बहुत ही मनभावन एवं रोचक है इसमें आखेट के दृश्य के अतिरिक्त आदिमानव को गाय चराते, शहद इकट्ठा करते हुए व्यक्तियों का अंकन हुआ है कहीं पर तो कोई संगीत के वाद्य यंत्र बजा रहा है। यहां संगीत विषयों पर भी सुंदर चित्र बने हैं जिनका विषय बिल्कुल स्पष्ट नजर आता है ऐसा नहीं कि पशुओं का ही अंकल हुआ है बल्कि कई प्रकार के दैनिक कार्यों को भी चित्रित किया गया है जैसा कि पूर्व में विवरण दिया जा चुका है। इसकी सभी विषयवस्तु बहुत ही प्रिय रही है।

पंचमढ़ी के पास ही होशंगाबाद क्षेत्र आता है जिसमें विश्व प्रसिद्ध एक विशालकाय हाथी का चित्र पाया गया है इस चित्र की मुख्य विशेषता उसकी हल्के पीले रंग की रंगसंगती है और इसके ही समीप एक और प्रमुख व विशाल भैसे के चित्र के दर्शन होते है। यह बड़े भैसे का चित्र दुनिया के सबसे प्रशिद्ध चित्रो में से एक है जिसको आदिम कलाकार ने भित्ति पर रंगों के माध्यम से प्रस्तुत किया है जो अपनी विशालता के लिए जाना जाता है उसकी लंबाई और ऊंचाई 10×6 फीट है इस प्रकार के ही अनेक चित्र इस गुफा में पाए गए हैं। मध्यप्रदेश का भोपाल क्षेत्र वैसे तो प्रागैतिहासिक चित्रकला की दृष्टि से बहुत ही प्रसिद्ध है परन्तु इसके आस पास अन्य स्थल दुनिया के समक्ष निकलकर आ रहे है जिनमे रायसेन, छतरपुर, पन्ना, ग्वालियर आदि क्षेत्र प्रमुख हैं। हालांकि यहा भीमबेटका गुफाओं की खोज बहुत ही महत्वपूर्ण है जिसने भारतीय शैल चित्रों में एक नई क्रांति सी ला दी है। 30 सितंबर 1973 ईस्वी को 'धर्म युग' सप्ताहिक में वीरेंद्र नाथ मिश्र का एक महत्वपूर्ण सचित्र लेख 'भीमबेटका की गुफाओं का रहस्य' प्रकाशित हुआ जिसके माध्यम से संपूर्ण भारत को इन भीमबेटका गुफा चित्रों के विषय में जानकारी प्राप्त होनी शुरू हुई यहां लगभग 600 से भी अधिक गुफाओं का पता चला है, इन गुफाओं की खोज श्री वी एस वाकणकर जी के द्वारा की गई थी। इन गुफाओं के यहां मिलने के पश्चात यह तो निर्धारित हो गया था, कि भारत के ऐतिहासिक मानव यहां पर रहता होगा। इन 600 में से लगभग 475 गुफाओ में चित्र पाए गए हैं। यहां की अधिकतर गुफाएं मध्य पाषाण काल ही मानी गयी है भीमबेटका ही भारत का ऐसा शैल चित्र स्थल है जहां बहुत ही अधिक संख्या में प्रागैतिहासिक कालीन गुहाचित्र प्राप्त हुए हैं इन चित्रो की दशा कुछ स्पष्ट है जिससे इसके विषय वस्तु समझ आ जाती हैं। इन गुफाओ के चित्र विषयो के दो स्तर प्राप्त होते है जिनमें पहले स्तर पर आखेट के चित्र है जिनमें आदि कलाकार ने स्वयं को शिकारी के रूप में दर्शाया है और जिसमें उसने हिरण बारहसिंगा, सूअर, जंगली भैंसे, घोड़े, हाथी एवं शस्त्र धारी घुड़सवार को चित्रित किया है जो किसी न किसी रूप में शिकारी जीवन जी रहा था उसने शिकार करने के बहुत अधिक प्रयत्न व विधिया अपनाई होगी, जिनका वर्णन उसने इन चित्रों के माध्यम से किया है, अंततः उसका यह प्रयास सफल भी हुआ है उसमें जो दूसरा स्तर है, वह है जानवरों को मानव के साथ अंतरंग मित्र के रुप में दिखाना। इसमें जो मानव है उसको पशुओं के साथ अंतरंग मित्र की भांति साथ दिखाया गया है, इन चित्रों में आदिमानव को पर कहीं पशु पालन करता हुआ, कहीं पर दूध निकलते हुए, कही

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- II, Issues-24, YEAR- April-June-2022

पशुओं को चराते हुए, कहीं पर खेती करते हुए आदि कार्यों में लिप्त दर्शाया गया है। इन चित्रों में उसने खुशहाल दृश्यों को दिखाया है, क्योंकि इस समय उसने सुखी जीवन की ओर पदार्पण करना शुरू कर दिया था। अब वह अपनी बस्ती बसाकर रहने लगा था।

निष्कर्ष– उपरोक्त विवेचन से हम यह कह सकते हैं कि आदिमानव शिकारी जीवन पर ही निर्भर था और शिकार जैसे कार्यों में अधिक व्यस्त रहता था। उसकी पेट की भूख शिकार करने से ही शांत होती थी। वह नाना प्रकार के प्रयत्न करके पशु पक्षियों का शिकार करता था, जिससे उसका जीव चलता था। जब उसने चित्रों का निर्माण करने की सोची होगी तो उसे अपने आसपास के वातावरण को ही चित्रित करने की प्रेरणा मिली होगी, क्योंकि उसने वही सब विषय चित्रित किये जो तत्कालीन जीवन का हिस्सा होते थे। विश्व के ज्यादातर स्थलों पर आखेट के ही दृश्य देखने को मिलते हैं किसी भी जीव या पशु को मारकर खाना ही उसके मुख्य दिनचर्या होती थी वह पूरे दिन शिकार की टोह जैसे कार्यों में लगा रहता था वह सुबह से शाम तक शिकार व कंदमूल के चक्कर में इधर–उधर भटकता रहता था जो कि उसने अपने चित्रों में चित्रण के माध्यम से दिखाया है क्योंकि इस कार्य से वह अपने पेट की भूख शांत करता और अपने तन को ढकता था जिससे कि वह सर्दी, गर्मी, और वर्षा से अपने आप को सुरक्षित कर सके। उसने ज्यादातर गेंडा, हाथी, बाईसन, सूअर, घोड़ा ,चीता, हिरण, सांभर बारहसिंघा तथा सिंह का शिकार को चित्रों में दिखाने का प्रयास किया है। इस प्रकार के चित्र में शिकारियों के हाथ में कांटेदार बरछी, भाले, ढाल तथा धनुष बाण आदि भी चित्रित मिलते हैं। जब इन चित्रों के विषयों का वृहत अध्ययन करते है तो यह पता चलता है की आदिम कलाकार ने इन चित्रो में शिकार का दृश्य ही चित्रित नहीं किया है बल्कि पशु पक्षियों को उपयोग की दृष्टि से भी चित्रित किया है जिसमें कहीं पर तो आदिमानव को शिकारी के रूप में दिखाया गया है और कहीं पर इसको पशुओ के साथ अंतरंग मित्र के सदृश्य दिखाया है। चित्र के विषय प्रत्येक स्थान पर भिन्न–भिन्न दर्शाए गए हैं। आदिम कलाकार ने आखेट से लेकर दैनिक क्रियाकलापों में लिप्त दिखाते हुए अपने आप को चित्रित किया है। इन चित्रों में मांगल्य तथा पूजा के प्रतीक चिन्ह भी मिले हैं जिनमें स्वास्तिक, त्रिशूल, चक्र तथा संख आदि द्रष्टिगोचर होते है। इन चित्रों में पक्षी के रूप में मोर का अंकन सर्वाधिक हुआ है जिससे यह सिद्ध होता है कि उस समय का आदिमानव मोर पक्षी को मुख्य पक्षी मानता होगा। इन गुहाओं में जादू–टोने, टोटके आदि के चिन्ह भी प्राप्त होते है जिनका प्रयोग वे कर्म कांड के प्रयोजन में करते होंगे जिसको आदिकालीन मानव ने अपने चित्रकला दर्शाया है। भारत तथा विश्व में जो प्रागैतिहासिक मानव के द्वारा चित्रित शैल चित्र मिले हैं उन पर अभी भी शोधार्थियों के द्वारा शोध किये जा रहे है। भारत में जो प्रागैतिहासिक कालीन मानव के द्वारा निर्मित शीला श्रेय मिले हैं कई स्थानों पर तो इन चित्रों को बहुत ही सारगर्भित विषयो को सरलता से चित्रित किया गया है जिन में मार्मिकता तथा गाम्भीर्य दृष्टिगोचर होता है। पूर्वोक्त विवेचन के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि यदि भारतीय शोधार्थियो की अनेक समूह कई वर्षों तक भी शोध कार्य करे तो तब जाकर कुछ अन्य सामग्री हमें प्राप्त हो सकती है क्योंकि जो प्रागैतिहासिक सामग्री या साक्ष्य हमें प्राप्त हुए हैं वह अभी भी बहुत कम है यदि खोज के बाद इस प्रकार के अन्य साक्ष्य प्राप्त होते हैं तो उस मानव की जो बेतहाशा मेहनत थी जो उसने अपने जीवन में अनुभव किया था, शायद उन अनुभवों को हम लोग देख सके और उनका अवलोकन कर सके। जिससे पूरा विश्व उनकी कला से प्रेरणा ले सके कि किस प्रकार से उसने अपने जीवन को चलाने के लिए बेतहाशा परिश्रम और संघर्ष किया। शोध के माध्यम से ही आदिम शैल चित्रों के अन्य क्षेत्रों की खोज सम्भव हो सकती है और संसार भर में उस मानव सभ्यता के कुछ और गूढ़ रहस्यों से परिचित हो सकेंगा, जिससे भारत की गौरव गाथा संपूर्ण विश्व सुन सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अशोक : पश्चिम की कला, संजय पब्लिकेशन।
2. प्रदीप, किरण : भारतीय कला (आ.ति–2), कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा०) लि०।
3. शर्मा, लोकेश चन्द्र : भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास, कृष्णा प्रकाशन मीडिया (प्रा०) लि०।
4. प्रताप, रीता : भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
5. अग्रवाल, आर० ए० : कला विलास भारतीय चित्रकला का विवेचन, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
6. sarkariguider-com
7. hi-m-wikipedia-org
8. Visual arts earning-com

*****